ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
"માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા"
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-3 अंक : 34

सहयोग शुल्क : रु. 1 / अक्टूबर : 2019

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"दिव्यांगजनो के लिए समाज के सभी वर्गों को एक झुठ होना चाहिए।"
– प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

"हार जीत सब बेमानी है
गिर गिर के उठना सीखो"
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

ना अपना ना पराया
ना तेरा ना मेरा
सब का तेज बन कर
अभी तो सूरज उगा है

हमें नरेंद्र मोदीज़ी की यह कविता का सार सोचना है। जैसे हर रोज़ उगने वाला सूरज सब के लिए नई उम्मीदे लेकर आता है। हमें ऐसी ही उम्मीदों की सुबह हर दिव्यांगजन को मिले उसके लिए प्रतिबध्ध होना है।

असुविधा में भी सुविधा का अनुभव करना कोई छोटी बात नहीं है। इस पत्रिका का हेतु समाज से जुड़े हुए दिव्यांग लोगों की मनोवेदना और मनोवैज्ञानिक हौसलों को आपके समक्ष रखना है। जिंदगी के हरएक मोड़ पर आपको मिलने वाली सुविधा के बारे में सोचो और इन दिव्यांगजनों के बारे में सोचो की जो लोग असुविधा को सुविधा में परिवर्तित कर के अपना जीवन बिताते है।

हम इन दिव्यांगजनों और आप के बीच एक माध्यम बनना चाहते है। आप से निवेदन है की हमारी यह छोटी सी मुहीम में आप भी हिस्सा बने और यह असुविधा को सुविधा बनाने में हमारी मदद करे। इस पत्रिका के बारे में आपके प्रतिभाव हमें भेजें. हम आपके द्वारा दिए जाने वाले सुझाव या विचार पत्रिका में प्रकाशित करेंगे।

पाठकों से हम यह अपेक्षा करते है की 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनों के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम व कोई दिव्यांगजन के विशेष प्रदान का ब्यौरा भी आप हमें भेज सकते है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

अक्टूबर : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 3 अंक : 34

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

दिव्यांग बच्चों ने मनाया शिक्षक दिन का उत्सव

एक शिक्षक के लिए अपने विद्यार्थिओं की ख़ुशी से बढ़कर और क्या हो सकता है ? बस यही सोच लिए अहमदाबाद के अख़बारनगर स्थित स्मित शाला के दिव्यांग बच्चों को टीचर्स-डे के अवसर पर 'मोन्टु की बिट्टु' नामक गुजराती फिल्म देखने के लिए ले जाया गया। वहां फिल्म के हीरो-हीरोइन और डायरेक्टर मौजूद रहे और दिव्यांग बच्चों के साथ फिल्म देखी और फिल्म के गीत पर डान्स- गरबा किया। फिल्म देखने के बाद शाला की और से सभी बच्चों ने 'डोमिनोज़' में अनलिमिटेड पिज़ा खाने का आनंद लिया।

वोइस टू दिव्यांग

राजकोट निवासी मानसी जोशी पैरा वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल किया।

मानसी जोशी को बचपन से ही बैडमिंटन में दिलचस्पी थी। मुंबई के भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर में पिता काम करते थे और यहीं मानसी ने इस खेल की बारीकियां सीखनी शुरू कीं। मानसी के खेल में निखार आने लगा और स्कूल और जिला स्तर पर उन्होंने खिताब जीतने शुरू कर दिए। लेकिन 2011 में उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई। एक सड़क दुर्घटना के चलते वह करीब दो महीने तक अस्पताल में रहीं।

पढ़ाई से इलेक्ट्रॉनिक इंजिनियर 30 वर्षीय मानसी ने हार नहीं मानी और 8 साल बाद उन्होंने पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप, बासेल स्विट्जरलैंड में सोने का तमगा जीता। रविवार को पीवी सिंधु के खिताब जीतने से कुछ घंटे पहले मानसी पदक जीत चुकी थीं। फाइनल में उनके सामने उन्हीं के राज्य की पारुल परमार थीं। पारुल डिफेंडिंग चैंपियन थीं। मानसी ने महिला एकल SL3 के फाइनल में जीत हासिल की। इस कैटिगरी में वे खिलाड़ी शामिल होते हैं जिनके एक या दोनों लोअर लिंब्स काम नहीं करते और जिन्हें चलते या दौड़ते समय संतुलन बनाने में परेशानी होती है।

पी वी सिंधु से भी पहले जीता वर्ल्ड चैंपियनशिप का गोल्ड वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप में देश को पहला गोल्ड मेडल दिलाने वाली स्टार खिलाड़ी पी वी सिंधु स्वदेश लौट चुकीं थी। उन्होंने इस टूर्नामेंट में अपना पहला स्वर्ण और कुल पांचवां पदक हासिल किया। सिंधु ने वर्ल्ड चैंपियनशिप में दो कांस्य और दो रजत पदक भी जीते हैं। मगर स्विट्जरलैंड के बासेल में देश का नाम रोशन करने वाली सिंधु अकेली भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी नहीं थीं। बल्कि मानसी जोशी ने भी इस इस देश में हुई पैरा वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा है।

मगर मानसी जोशी की कहानी पी वी सिंधु की तरह सीधी और सरल नहीं है। हालांकि मानसी ने नौ साल की उम्र से ही इस खेल में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी। उनके पिता गिरीश जोशी भाभा ऑटोमिक रिसर्च सेंटर में बतौर वैज्ञानिक काम किया करते थे। उनके दो बेटी और एक बेटा है। तीनों बच्चे अपने पिता को आदर्श मानते हैं जो खुद भी एक टेनिस खिलाड़ी रह चुके हैं।

मूलरूप से राजकोट निवासी मानसी ने शुरुआती दिनों में स्कूल और डिस्ट्रिक्ट स्तर पर कई टूर्नामेंट में सफलता हासिल की. मगर 2011 में मानसी की जिंदगी में एक भयानक हादसा हुआ। दरअसल, मानसी टू-व्हीलर से कहीं जा रही थीं तभी पीछे से ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में उनका बायां पैरा काटना पड़ा। मानसी 50 दिन तक अस्पताल में भर्ती रहीं। मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और दोबारा खेलना शुरू कर दिया। मानसी ने तय किया कि वो अपने सपने को मरने नहीं देंगी। यही वजह रही कि उन्होंने हैदराबाद में पुलेला गोपीचंद की अकादमी में रजिस्ट्रेशन कराया। इसके बाद उन्होंने अपने सपनों को उड़ान देना शुरू कर दिया।

मानसी ने 2015 में इंग्लैंड में हुई पैरा वर्ल्ड चैंपियनशिप में मिक्स्ड डबल्स का रजत पदक हासिल किया। ये उनका पहला बड़ा पदक था। इस टूर्नामेंट में गोल्ड जीतने की तैयारी तभी से शुरू हो गई थी। हालांकि हादसे के आठ साल बाद 2019 में मानसी स्वर्णिम कामयाबी हासिल करने में सफल रहीं। 30 साल की इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर मानसी ने पीवी सिंधु से कुछ ही घंटे पहले गोल्ड मेडल अपने नाम किया। मानसी ने SL3 महिला सिंगल्स वर्ग के फाइनल में हमवतन पारुल परमार को मात दी।

दुर्घटना ने मानसी के शरीर को चोट पहुंचाई लेकिन उनके हौसले को डिगा नहीं पाई। ट्रक से लगी उस चोट के लिए मानसी को अपनी बाईं टांग गंवानी पड़ी। लेकिन कृत्रिम टांग के जरिए वह फिर खड़ी हुईं और खेलना शुरू किया। उनकी आंखों में बैडमिंटन का सपना था। वह हैदराबाद के पुलेला गोपीचंद अकादमी में पहुंची। 2017 में साउथ कोरिया मे हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में उन्होंने ब्रॉन्ज मेडल जीता।

जीत के बाद मानसी ने अपने फेसबुक पेज पर खुशी जाहिर की। उन्होंने लिखा - 'मैंने इसके लिए कड़ी मेहनत की है और मैं बहुत खुश हूं कि इसके लिए बहाया गया पसीना और मेहनत रंग लाई है। यह वर्ल्ड चैंपियनशिप में पहला गोल्ड मेडल है।' मानसी ने इसके लिए गोपचंद अकादमी के अपने कोचिंग स्टाफ का भी शुक्रिया अदा किया। इसके साथ ही उन्होंने गोपीचंद का भी शुक्रिया अदा किया। उन्होंने लिखा- 'गोपी सर, मेरे हर मैच के लिए मौजूद रहने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।'

मानसी की छोटी बहन ने नूपुर ने बताया कि अब मानसी का अगला लक्ष्य अगले साल होने वाले पैरालिंपिक खेल हैं। मानसी के पिता ने बताया कि 2017 में साउथ कोरिया के उल्सान में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में भी मानसी ने कांस्य पदक हासिल किया था।

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा आयोजित सहायता

पानीके बाढ़ से प्रभावित हुए वृद्ध, विधवा, निराधार और दिव्यांग भाई-बहनों जिनके घरका सामान, धान्य और पहनने के कपडे भी पानी में बह गए थे। दिनांक ८-०९-२०१९ रविवार को शाम ४ बजे इन जरूरतमंद लोगो को अन्न-किट दी गई, जिसमें गेंहू, चावल, दाल और तेल समाविष्ट था वह दे कर प्रोत्साहित किया गया। वडोदरा शहर के समा विस्तार में नवीनगरी, संजयनगर, एकतानगर और जलारामनगर में रहने वाले वृद्धो को भी यह किट की सहाय दी गई। इन लोगों को सरकार द्वारा दिए जाने वाली विधवा पेन्शन योजना और वृद्ध पेन्शन योजना के बारे में बताया गया और इन योजनाओं का अवश्य लाभ लेने के हेतु समजाया भी गया। संस्था द्वारा किसी भी प्रकार की बिमारी और दवाईओं की मुफ्त सहाय दी जाती है वह भी बताया गया। गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा किया गया इस भगीरथ कार्य में JCI क्लब द्वारा सभी लोगों को नास्ता का वितरण किया गया ऐसा संस्था के स्थापक रुक्ष्मणीबेन जे शाह ने बताया।

दिव्यांगजन संचालित एक अनोखा कैफे

नौकरी मांगने पहुंचे 12 दिव्यांग, डीएम ने कलेक्ट्रेट परिसर में ही 'कैफे एबल' खुलवा दिया

- कैफे की एक दिन की कमाई 10 हजार रुपए, सभी को वेतन बैंक से मिलता है।
- डीएम संदीप ने बताया - सभी को सरकारी नौकरी देना संभव नहीं था, इसीलिए कुछ नया सोचा।
- सभी दिव्यांग आराम से काम कर सकें, इसलिए उन्हें 45 दिन की होटल मैनेजमेंट की ट्रेनिंग भी दिलवाई।

तमिलनाडु के थूथुकुडी जिला परिसर में खुले 'कैफे एबल' से 12 दिव्यांगों को रोजगार मिला है। दरअसल, पिछले दिनों 12 दिव्यांग कलेक्टर संदीप नंदूरी के पास नौकरी मांगने पहुंचे थे।

दिव्यांगों से बातचीत के दौरान डीएम उनसे प्रभावित हुए और उन्हें कलेक्ट्रेट परिसर में ही कैफे खुलवाने का प्रस्ताव दिया और वे मान गए। सभी दिव्यांग आराम से काम कर सकें, इसलिए उन्हें 45 दिन की होटल मैनेजमेंट की ट्रेनिंग भी दिलवाई गई।

अब यहां 12 दिव्यांग काम कर रहे हैं। इनमें से 11 लोकोमोटर दिव्यांग हैं। यानी उनके पैर चलने-फिरने की हालत में नहीं हैं। जबकि एक सदस्य को सुनाई नहीं देता। अब डीएम संदीप नंदूरी अक्सर यहीं अपनी मीटिंग करते हैं। साथ ही खाना भी खाते हैं।

डीएम संदीप नंदूरी बताते हैं - 'मुझे अक्सर दिव्यांगों से नौकरियों के लिए याचिकाएं मिलती थीं, लेकिन सभी को सरकारी नौकरी देना संभव नहीं है। इसलिए हमने एक कैफे खोलने के विचार के साथ उन्हें अपना उद्यम चलाने में सक्षम बनाने का फैसला किया। कैफे की एक दिन की कमाई 10 हजार रु. है। कैफे की कमाई बैंक में जमा होती है। यहीं से दिव्यांगों को वेतन दिया जाता है।

वोइस टू दिव्यांग

ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे केर सेंटर की मनो दिव्यांग छात्रा मानसी राजपूत का जन्मदिन ११-०९-२०१९ को मनाया गया। संस्था द्वारा बर्थडे केक मंगवाया गया और बच्चों और उनके माता-पिता की उपस्थिति में केक काट के जन्मदिन मनाया गया। मानसी को उपस्थित सभी द्वारा जन्मदिन की शुभकामनाऐं भी दी गई।

नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट की पेरेंट्स ग्रुप की सिंगापोर मुलाकात

अहमदाबाद के मेमनगर स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कुल फॉर मेन्टली चैलेंज्ड के १९ पेरेंट्स ने उनके मनोदिव्यांग बच्चों के साथ दिनांक १६ से २३ सितम्बर दरम्यान सिंगापोर का प्रवास किया।

संस्था के द्वारा विदेश प्रवास आयोजन के अंतर्गत मनोदिव्यांग बच्चों और उनके पेरेंट्स का प्रवास का आयोजन किया गया था। जिस में हॉटल के साथ साथ क्रूज में भी सब प्रवासी को ले जाया गया।

इन प्रवास के दौरान इन पेरेंट्स और बच्चों ने नाईट सफारी, सिंगापोर सिटी टूर, सिंगापोर फ्लायर, यूनिवर्सल स्टूडियो, सेन्टोसा, केबल कार, विंग्स ऑफ़ टाइम, गार्डन बाय ध बे, क्लाउड फॉरेस्ट, मरीना बे सेन्ड पार्क, क्रूज़ से बिन्टन आइसलेंड, मुस्तफ़ा बाज़ार जैसी जगह की मुलाकात की।

इस प्रवास में पेरेंट्स और दिव्यांग बच्चों को अति आनंद आया। सब प्रवासी सिंगापोर की यादो के साथ सुरक्षित वापस आए ऐसा नवजीवन ट्रस्ट के संचालक श्री निलेश पंचाल ने बताया।

नेत्रहीन सीईओ जिसने बना दी 50 करोड़ की कंपनी

भगवान उसे इस रंग-बिरंगी दुनिया में लाये तो सही लेकिन उसके आँखों को वो रौशनी देना ही भूल गए, जिससे वह इन रंगों को देख पाता। जिसकी जिन्दगी कभी आसान नहीं रही। जन्म से ही निराशा के काले बादल उसके जीवन में छाये रहे।

दृष्टिहिनता के कारण बचपन से ही उसने समाज में भेदभाव के व्यवहार का सामना किया। जिसके जन्म लेते ही गांव के लोगों ने उसके माता-पिता को सलाह दी थी कि – 'यह बिना आँखों का एक बेकार बच्चा हैं। जो आगे चलकर आप पर ही बोझ बनेगा।'

हम बात कर रहे है, आंध्र-प्रदेश में जन्मे श्रीकांत बोला (Shrikant Bholla) की। जिन्होंने हैदराबाद में Bollant Industries के नाम से एक कंपनी शुरू की है। यह एक ऐसी कंपनी है, जिसका मुख्य उद्देश्य अशिक्षित और अपंग लोगों को रोजगार देना, उपभोक्ताओं को पर्यावरण के अनुकूल Packaging Solutions प्रदान करना हैं।

श्रीकांत ने यह कार्य कर उन सभी बातों को झुठला दिया है, जिसको समाज एक दृष्टिहीन व्यक्ति द्वारा किये जाने को महज़ एक कल्पना मानता हैं। यही नहीं इस कंपनी का सलाना turnover 50 करोड़ से भी ज्यादा का है!

आज उनके पास कंपनी की चार उत्पादन ईकाइयां है – एक हुबली (कर्नाटक में), दूसरी नीजामाबाद (तेलंगना में), तीसरी भी तेलंगना के हैदराबाद में ही और चौथी, जो कि सौ प्रतिशत सौर उर्जा द्वारा संचालित होती हैं, आंध्र-प्रदेश के श्री सीटी में है। जो की चेन्नई से 55 किमी. दूर है।

गरीबी में बचपन –

उनका जन्म भी एक ऐसे निर्धन किसान परिवार में हुआ, जिसकी वार्षिक आय 20000 रू. (54रू. प्रति दिन) से भी कम थी। इसका मतलब यह है कि परिवार के सदस्यों को यह भी नहीं मालूम था कि उनको शाम का खाना नसीब होगा भी या नहीं।

जब श्रीकांत बड़े होने लगे, तो उनके किसान पिता उनको अपने साथ खेत में हाथ बटाने के लिए ले जाने लगे। लेकिन वे उनकी खेत में कोई मदद नहीं कर पाते। फिर उनके पिता ने सोचा शायद ये पढ़ाई में अच्छा करे। इसलिए उन्होंने उनका नामांकन गांव के ही स्कूल, जो की उनके घर से लगभग पांच किमी. दूर था, में करवा दिया।

अब वे रोज स्कूल जाने लगे। ज्यादातर स्कूल का सफर उन्हें रोज पैदल ही तय करना पड़ता था। वे ऐसे दो सालों तक स्कूल जाते रहे। वे कहते है :-

"स्कूल में कोई भी मेरी मौजूदगी को स्वीकार नहीं करता था। मुझे हमेंशा कक्षा के अंतिम बेंच पर बिठाया जाता था। मुझे PT की कक्षा में शामिल होने की मनाही थी। मेरे जीवन में वह एक ऐसा क्षण था, जब मैं यह सोचता था कि दुनिया का सबसे गरीब बच्चा मैं ही हूं, और वो सिर्फ इसलिए नहीं कि मेरे पास पैसे की कमी थी, बल्कि इसलिए की मैं अकेला था।"

जब उनके पिता को यह धीरे-धीरे अनुभव होने लगा कि उनका बच्चा इस स्कूल में कुछ सीख नहीं पा रहा है, तो उन्होंने श्रीकांत को हैदराबाद के ही दिव्यांग बच्चों के विशेष विद्यालय में भर्ती कर दिया। वहां श्रीकांत कुछ ही महीनों के अंदर अच्छा प्रदर्शन करने लगे। वे वहां सिर्फ चेस और क्रिकेट खेलना ही नहीं सीख गए बल्कि वे इन खेलों में निपुण भी हो गये। कक्षा में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उतना ही नहीं कक्षा में उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के चलते उन्हें एक बार भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ Lead India Project में काम करने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

स्कूल में अच्छा पदर्शन करने के बावजूद उन्हें ग्यारवीं कक्षा में विज्ञान विषय का चुनाव करने से मना कर दिया गया। श्रीकांत ने दसवीं की परीक्षा आंध्र-प्रदेश स्टेट बोर्ड से 90 प्रतिशत से ज्यादा अंकों के साथ उर्त्तीण की थी। लेकिन फिर भी बोर्ड का कहना था कि ग्यारवीं में दृष्टिहीन बच्चें विज्ञान विषय को नहीं चुन सकते हैं। श्रीकांत अपने मन में सोचते –

'क्या ये सिर्फ इसलिए कि मैं जन्मांध हूं ? नहीं, मुझे लोगों के देखने के नजरियें के द्वारा दृष्टिहीन बनाया गया है।'

बोर्ड के द्वारा विज्ञान विषय को चुनने कि स्वीकृति नहीं दिये जाने के बाद, उन्होंने निश्चिय किया कि वे इसका विरोध करेंगे। वे कहते है –

"मैंने छः महीनें तक इसके लिए सरकार से लड़ता रहा और अंत में सरकार ने ही निंदेश जारी कर मुझे ग्यारवीं में विज्ञान लेकर पढ़ाई करने कि अनुमती दे दी, लेकिन अपने बूते पर!"

इसके बाद क्या था। श्रीकांत ने दिन-रात एक कर अपने कठिन परिश्रम के बल पर बारहवीं की परीक्षा में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

जब आईआईटी में दाखिला नहीं मिला –

जिन्दगी भी कभी-कभी मजाकिया ढ़ग से रूकावटों की नकल उतारने लगती है। खासकर उन लोगों के साथ जिनका कोई बड़ा उद्देश्य होता हैं। श्रीकांत के साथ भी ऐसा ही हुआ।

बारहवीं के बाद उन्होंने देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित इंजिनीयरिंग कॉलेजों में नामांकन के लिए आवेदन किया लेकिन सभी ने आवेदन यह कह कर लौटा दिया कि 'आप दृष्टिहीन है। इसलिए आप IIT की प्रतियोगी परीक्षा में नहीं बैठ सकते।' उसके बाद श्रीकांत ने आगे के रास्ते को बड़े ध्यान पूर्वक चुना और इंटरनेट के माध्यम से यह पता लगाने का प्रयास करने लगे कि क्या उनके जैसे लड़कों के लिए कोई Engineering Programs उपलब्ध हैं ?

इसी क्रम में उन्होंने अमेरीका के कुछ प्रतिष्ठित इंजिनीयरिंग कॉलेजों में आवेदन किया। जिसमें चार कॉलेजों ने उनका आवेद स्वीकार भी कर लिया। ये कॉलेज थे – **MIT, Stanford, Berkeley** और **Carnegie Mellon** उन्होंने **MIT** को चुना और वे उस स्कूल के इतिहास में पढ़ने वाले पहले अंतराष्ट्रीय दृष्टिहीन विद्यार्थी बन गये। प्रारम्भ में उन्हें वहां भी कई दिक्कतों का सामना करना पड़ा, लेकिन धीरे-धीरे उनके प्रदर्शन में सुधार आने लगा।

असक्षम लोगों का सहारा बने –

जब उनकी स्नातक की पढ़ाई पूरी हो गई तो वे अमेरीका में अपने सुनहरे भविष्य को छोड़, भारत लौट आये। यहां आकार उन्होंने शारीरिक रूप से कमजोर लोगों के लिए एक सेवा प्रारम्भ कि जिससे उन लोगों का पुनर्वासन हो सके, उनको प्रोत्साहित व मदद की जा सके और सबसे बड़ी बात, समाज में उनको एक सम्मानजनक स्थान दिलाया जा सके। इस तरह श्रीकांत ने लगभग 3000 लोगों की मदद की लेकिन जब उन्हें ये महसूस हुआ कि अब ये लोग तो सामान्य जिन्दगी जीने लगे लेकिन ये अपनी प्रतिदिन कि जरूरतों के लिए किस पर आश्रित रहेगें ? उनके रोजगार का क्या होगा ? इसलिए उन्होंने **Bollant Industries** की स्थापना कि जो अभी लगभग 200 से ज्यादा दिव्यांग लोगों को रोजगार प्रदान कर उन्हें भी सम्मान से जीवन जीने का अवसर दे रही हैं।

हर इंसान को जीवन में विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। वह सपने देखता है, और उसे धरातल पर उतारने के लिए परिश्रम का सहारा लेता है। हालांकि यह दूसरी बात है कि बस कुछ ही इंसान सफलता की उस लकीर को पार कर पाते हैं, जिसके बाद दुनिया उनको सम्मान की दृष्टि से देखती है, और श्रीकांत भी उन्हीं लकीर पार करने वालों में से एक है।

उन्होंने अपंग लोगों के लिए कुछ रचनात्मक करने के दृढ़ संकल्प से दुर्भाग्य की काली घटाओं को हटा अपने आपको साबित किया। श्रीकांत जैसे लोग हमेशा दुनिया को यह साबित करके दिखाते है कि दृढ संकल्प के दम पर कुछ भी किया जा सकता है। हम श्रीकांत जैसे लोगों को सलाम करते है।

प्रिती श्रीनिवासन की संघर्षगाथा

**एक तैराक और क्रिकेट खिलाड़ी जिससे उपरवाले ने सबकुछ छीन लिया।
पर उस खिलाड़ी ने जिंदगी को ही मैदान बना लिया और जीतने की ललक जारी रखा..**

प्रीती श्रीनिवासन 'सोलफ्री' के संस्था की को-फाउंडर हैं। प्रीती पहले राष्ट्रीय स्तर की तैराक और तमिलनाडु के अंडर 19 महिला क्रिकेट टीम की कैप्टन हुआ करती थीं। पर पांडिचेरी में एक हुए हादसे के बाद से वो गले के नीचे से पैरालाइज्ड हो गईं। इस हादसे ने प्रीती से सबकुछ छीन लिया पर उन्होंने अपना दुख भुलाकर जरूरत मंद लोगों की मदद करने की ठानी और ऐसे में 'सोलफ्री' संस्था का जन्म हुआ।

ये बात तकरीबन 17 साल पहले की है, जब प्रीती अपने कुछ साथियों के साथ बीच पर समुद्र किनारे लहरों का मजा ले रही थी। तभी अचानक एक लहर उनसे ऐसे आकर टकराई जिसने प्रीती की जिंदगी बदल डाली। उस वक्त क्या हुआ आसपास मौजूद किसी को समझ नहीं आया. लहरों में फंसी प्रीती अपने शरीर में हलचल तक नहीं कर पा रहीं थीं।

जब तक उनके साथी उन्हें बचाने आए, प्रीती तब तक अपनी सांस रोककर अपनी जिंदगी बचाने में सफल रहीं। जब प्रीती को अस्पताल ले जाया गया तब पहले प्रीती की पैरालाइज होने की जानकारी नहीं मिल पाई। पर चेन्नई के एक अस्पताल में उनके विकलांगता को पहचाना गया।

चैपिंयन की तरह जीने वाली प्रीती से सबकुछ छीन गया। उनके सारे दोस्त उनसे बिछड़ गए। एक कॉलेज में उन्हें इसलिए दाखिला नहीं मिल पाया क्योंकि वो तीसरी मंजिल पर था। तब प्रीती की मां ने उनका हौसला रखा और अपने ही जैसे स्पाइनल कॉर्ड से विकलांग लोगों की मदद करने का आइडिया दिया। आज 'सोलफ्री ' एक बहुत पॉपुलर संस्था है जो विकलांग और जरूरतमंदों को सम्मान की जिंदगी जीने में मदद कर रहा है। संस्था खासकर महिलाओं को लेकर ज्यादा सजग रहती है। 'सोलफ्री ' का मुख्य उद्देश्य स्पाइनल कॉर्ड के चोट के बारे में लोगों को जागरुक करना, जरूरतमंदों को डोनेशन के जरिए सपोर्ट सिस्टम दिलवाना, उन्हें शिक्षा और रोजगार दिलाना।

संस्था एक स्टाइपंड प्रोग्राम भी चलती है, जिसमें स्पाइनल कॉर्ड विकलांगता वाले जरूरतमंद जो बिना पैसे के जिंदगी काट रहें उन्हें एक साल तक 1000 रुपये देती है। संस्था ने अभी एक व्हीलचेयर भी एक टैलेंटेड पैरा ओलंपियन को दिया है। जिसकी कीमत 3.5 लाख रुपये है। संस्था ने पोलिओ से पीड़ित एक महिला को सीलिंग मशीन भी दिया है। साथ ही 'सोलफ्री' एक रिहैबीलिटेशन सेंटर खोलने की भी तैयारी कर रही है जो जरूरतमंदों के लिए घर जैसा होगा।

वोइस टू दिव्यांग

ॐ कार दिव्यांग डे-केर सेन्टर के द्वारा ट्रैफिक अवेरनेस का कार्यक्रम अहमदाबाद के चिल्ड्रन पार्क, लाल दरवाजा पर किया गया जिसमें दिव्यांग बच्चों को ट्रैफिक नियम, रेल्वे क्रॉसिंग, फ़ायर सेफ़्टी और पेट्रोल पम्प के नियमों की जानकारी दी गई। बाद में इन बच्चों को हेरिटेज सिटी की पहचान ऐसी सीदी सैयद की जाली के स्थल पर भी ले जाया गया।

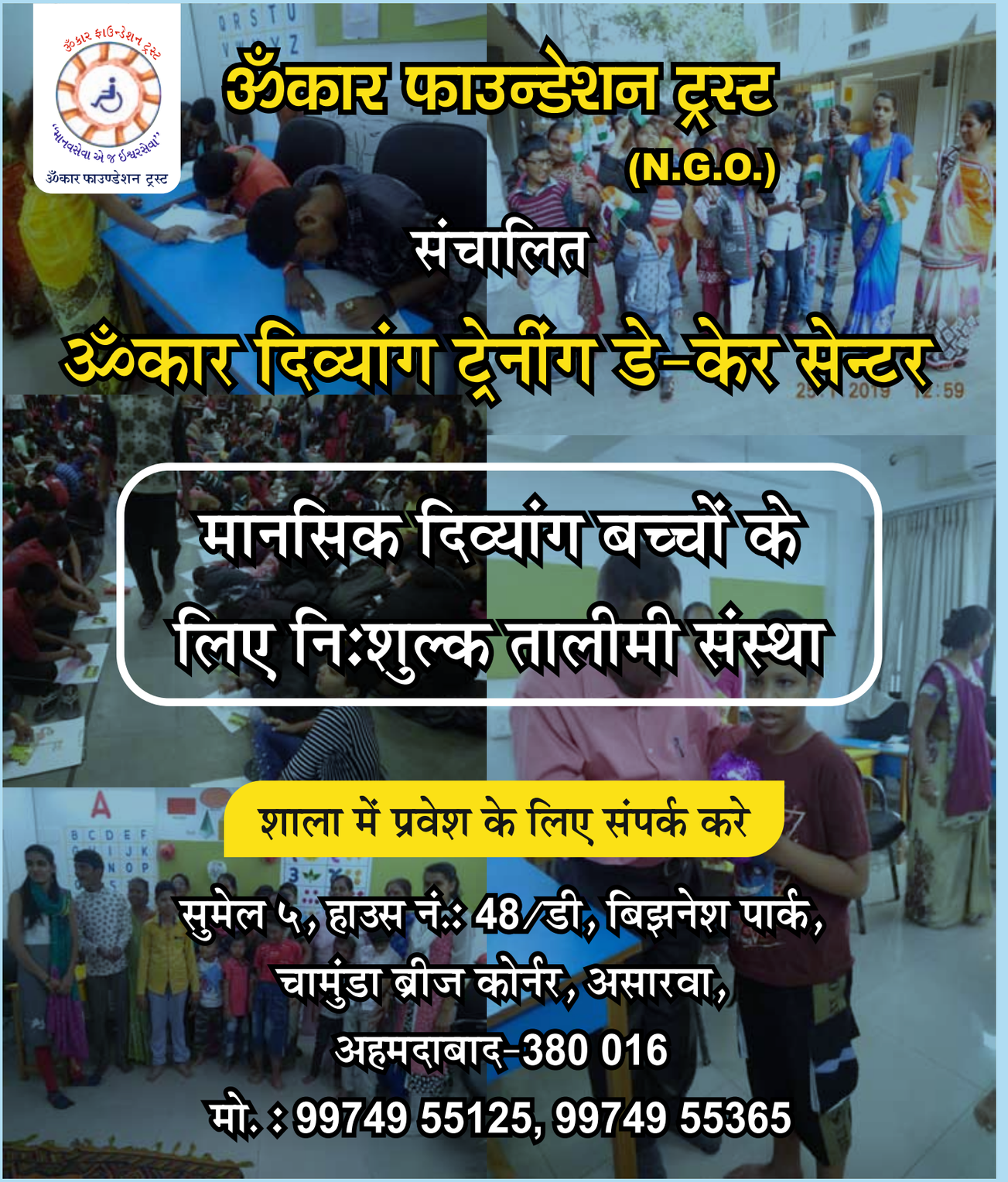

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीमी संस्था

शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे

सुमेल ५, हाउस नं.: 48/डी, बिझनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर